सी.सी.ई. पर कार्यशाला : एक विचार

महुआ



आज हमारे आकलन को देखने के नजरिए में बदलाव आया है। आकलन और मूल्यांकन की पुरानी प्रणाली (पारम्परिक परीक्षा प्रणाली) मुख्य रूप से पेपर-पेंसिल टेस्ट पर आधारित थी और उसमें रटकर सीखने व याद करने को बहुत महत्त्व दिया जाता था। इसका फोकस सिर्फ बच्चों के ज्ञान और समझ के स्तर को मापना था। बच्चों को जो अंक और श्रेणी (रैंक) दी जाती थी उससे यह पता चलता था कि सेमेस्टर के अन्त में वे किस अधिगम स्तर तक पहुँचे हैं और अपनी कक्षा के बाकी बच्चों के मुकाबले उनकी स्थिति क्या है। इसमें उपचार की कोई गुंजाइश नहीं थी। इसमें बच्चे के कौशलों, उच्च मानसिक क्षमताओं एवं उसके समग्र व्यक्तित्व के विकास को बहुत ही कम महत्त्व दिया गया। समय के साथ-साथ बच्चे के अधिगम में जो प्रगति होती थी, उसका मूल्यांकन कभी नहीं किया जाता था। इन सबके कारण बच्चों और उनके माता-पिता में चिन्ता, तनाव, कुण्ठा और अपमान की भावना जन्मी। 21 वीं सदी के ज्ञान पर आधारित समाज के लिए इस प्रकार की परीक्षा प्रणाली बेमेल थी क्योंकि यह समाज चाहता था कि बच्चे समस्या को सुलझाने के लिए नए-नए तरीके खोजें। अत: पुरानी प्रणाली को तत्काल बदलना जरूरी था। केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड (सी.बी.एस.सी.) ने 2009 में मूल्यांकन की एक नई योजना शुरू की जिसे सतत एवं व्यापक मूल्यांकन या संक्षेप में सी.सी.ई. कहा गया। यह स्कूल पर आधारित मूल्यांकन प्रणाली है जो शिक्षण-अधिगम की प्रक्रिया के साथ समेकित है। इसका मानना है कि आकलन को शिक्षण-अधिगम के बाहर की एक बार होने वाली गतिविधि के रूप में नहीं देखा जाना चाहिए वरन इसे तो सतत होना चाहिए और शिक्षण-अधिगम की प्रक्रिया में गुँथा हुआ होना चाहिए। मूल्यांकन की यह नई योजना बच्चे के समग्र विकास पर भी ध्यान देती है (व्यापक) और इसलिए इसमें शैक्षिक (विषय विशेष) और सह-शैक्षिक (जीवन कौशल, अभिवृत्ति, मूल्य और सह पाठ्यक्रम) पहलुओं को शामिल किया गया है। मूल्यांकन प्रक्रिया के इन दोनों पहलुओं का आकलन रचनात्मक और योगात्मक आकलन के माध्यम से किया जाएगा। अंक और श्रेणी देने के स्थान पर ग्रेडिंग व्यवस्था एवं प्रतिशतक श्रेणी की सिफारिश की गई।

मूल्यांकन की यह नई प्रणाली शिक्षकों से क्या माँग करती है?

यह तो जाहिर है शिक्षक की भूमिका और जिम्मेदारी उल्लेखनीय रूप से बढ़ गई है। आज शिक्षक एक ऐसा व्यक्ति नहीं है जो बच्चे को सिर्फ ज्ञान देता हो। अब जरूरत इस बात की है कि शिक्षक बच्चे को समग्र रूप से समझें-औपचारिक और अनौपचारिक दोनों परिस्थितियों में बच्चे का अवलोकन करें और बच्चे के व्यवहार के अवलोकन के रिकॉर्ड को निष्पक्ष रूप से रोजाना दर्ज करें। पढ़ाते समय शिक्षकों को बच्चे की अधिगम सम्बन्धी कठिनाइयों को समझकर उन्हें दूर करने के प्रयास करने चाहिए और बच्चे की प्रगति के बारे में उसके माता-पिता को समय-समय पर फीडबैक देना चाहिए ताकि सुधारात्मक एवं उपचारात्मक कदम उठाए जा सकें और बच्चा अपेक्षित स्तरों तक पहुँच सके।

हर बच्चे के सीखने की शैली अलग होती है। बच्चे की हर जरूरत का ध्यान रखने के लिए शिक्षक को उनके आकलन के लिए विविध प्रकार के उपकरणों और तकनीकों का विकास करना होता है। बच्चे के आकलन की हर गतिविधि के लिए शिक्षक को विवरणात्मक संकेतक विकसित करने होते हैं।

ग्रेड और प्रतिशतक रैंकों को देने की सी.सी.ई. की सिफारिश के अनुसार रिपोर्ट कार्ड बनाने का काम शिक्षकों के लिए बहुत विस्तृत और समय लेने वाला बन गया है।

नई मूल्यांकन प्रणाली को कार्यान्वित करने के लिए क्या शिक्षक आवश्यक सामग्री से लैस हैं?

भारत में विद्यार्थी-शिक्षक का अनुपात बहुत ज्यादा है और उसे देखते हुए यह काम अत्यन्त चुनौतीपूर्ण है। यही नहीं, अधिकतर शिक्षकों (जब वे खुद स्कूल में विद्यार्थी थे) को पारम्परिक रटने पर आधारित तरीके से ही पढ़ाया गया था और उनका दिमाग इस बात को मान चुका है कि बच्चे के प्रदर्शन का आकलन पेपर-पेंसिल टेस्ट से ही करना चाहिए। और अब उनसे कहा जा रहा है कि कि बच्चे का आकलन समग्र रूप से किया जाए और वह भी बहुविध उपकरणों और तकनीकों के माध्यम से जिसके बारे में उन्हें बहुत कम या नहीं के बराबर जानकारी है।

सी.सी.ई.के प्रशिक्षण पर शिक्षकों के साथ अनौपचारिक रूप से बातचीत करते समय जो बात उभरकर सामने आई वह थी उनका तनाव। किसी नई योजना के बारे में पुस्तिका में पढ़ना एक अलग बात है लेकिन उसे कक्षा में लागू करने के लिए शुरू में बहुत मदद और सहारे की जरूरत होती है। इसलिए शिक्षक सी.सी.ई.के प्रशिक्षणों एवं कार्यशालाओं को एक 'मसीहा' के रूप में देखते हैं। मेरी समझ तो यह है कि जब रचनात्मक आकलन के लिए गतिविधियों की योजना बनाने की बात आती है तब शिक्षकों को बहुत दिक्कत पेश आती है। उन्हें संकेतकों के बारे में भी बहुत अधिक स्पष्टता नहीं है।

रचनात्मक आकलन को संचालित करने के लिए जो प्रक्रिया आवश्यक है, उसके बारे में यहाँ एक सुझाव योजना दी जा रही है।

पहले तो कक्षा में पढ़ाने के लिए कोई अवधारणा चुननी चाहिए-उदाहरण के लिए शिक्षक ने 'प्राणी जगत' का प्रकरण चुना।

अब चुने हुए प्रकरण के अधिगम के परिणामों की पहचान करनी होगी। अगर हम ऊपर बताई गई अवधारणा को लें तो उसके अपेक्षित अधिगम परिणाम इस प्रकार हो सकते हैं-

सुझाई गई गतिविधि को करने के बाद विद्यार्थी ये सब करने में सक्षम हो जाएँगे-

- पशुओं और पक्षियों के नाम की सूची बना पाएँगे।
- दिए हुए विवरण की सहायता से विभिन्न पक्षियों और पशुओं को पहचान पाएँगे।
- जानवरों को विविध प्रकारों में वर्गीकृत कर पाएँगे (पक्षी, सरीसृप, कीड़े और स्तनधारी)।
- प्रत्येक जानवर के आवास-स्थल के बारे में बुनियादी जानकारी का विकास कर पाएँगे।
- पूछताछ के कौशल का विकास कर पाएँगे।
- किसी पत्रिका के माध्यम से अपने निष्कर्षों को प्रस्तुत कर पाएँगे।
- समूहों में काम कर पाएँगे।

अधिगम के परिणाम के आधार पर शिक्षक को अवधारणाओं के लिए आकलन की रणनीति बनानी चाहिए। जिन कौशलों और दक्षताओं को शिक्षक बच्चों में विकसित करना चाहते हैं उन्हीं पर आधारित गतिविधि चुननी चाहिए। पहले वाले उदाहरण के आधार पर यानि प्राणी जगत के बारे में पढ़ाते समय शिक्षक ने बच्चों को चिड़ियाघर की यात्रा पर ले जाने की योजना बनाई। यात्रा के पहले विद्यार्थियों से कहा गया कि वे चिड़ियाघर के रक्षक से पूछने के लिए प्रश्नों की सूची बनाएँ। यात्रा के बाद इकट्ठा की गई जानकारी के आधार पर विद्यार्थियों को अपने-अपने समूहों में एक पत्रिका तैयार करके उसे सबके सामने प्रस्तुत करने को कहा गया।

बच्चे की विभिन्न विशेषताओं (शैक्षिक और गैर-शैक्षिक दोनों) का आकलन करने के लिए शिक्षक को विवरणात्मक संकेतक तैयार करने पड़ते हैं।

संकेतक की एक विशेषता यह है कि उन्हें अवलोकनीय और मापनीय होना चाहिए। उदाहरण के लिए बच्चे की 'समझ' को मापने का कोई संकेतक नहीं हो सकता। इसका कारण यह है कि जब कभी भी पाठ को पढ़ाते समय शिक्षक पूछते हैं "क्या तुम समझ गए?" तो अवधारणा के न समझ में आने पर भी (या गलत समझने पर) बच्चा 'हाँ' कह सकता है। इसलिए शिक्षक को बच्चे की समझ को जाँचने के विविध प्रकार के तरीकों के बारे में सोचना चाहिए जैसे कि उन्हें बच्चे से उस अवधारणा को 'समझाने', 'परिणाम निकालने', 'चित्र द्वारा अवधारणा की समझ को दर्शाने' को कहना चाहिए और अगर बच्चा ऐसा कर सके तो इसका यह मतलब है कि उसने अवधारणा को समझ लिया है। इसी प्रकार गैर-शैक्षिक संकेतक के लिए इस प्रकार का संकेतक देना ठीक नहीं कि "बच्चा नेतृत्व के गुण प्रदर्शित करता है।" हमें 'नेतृत्व' शब्द की और अधिक व्याख्या करने के लिए इस प्रकार के संकेतक देने चाहिए जैसे "काम करने में पहल करता है", "निर्णय लेता है" आदि। अगर संकेतक चुनी हुई गतिविधि के उद्देश्यों या अधिगम के परिणामों से सम्बन्धित हों तो उन्हें लिखना आसान हो जाता है। नीचे तालिका में एक उदाहरण दिया गया है-

अधिगम के परिणाम / उद्देश्य	**विवरणात्मक सूचक**
अपने आसपास पाए जाने वाले जानवरों की शारीरिक विशेषताओं का वर्णन करना	बच्चा अपने आसपास के जानवरों को उनकी शारीरिक विशेषताओं के आधार पर पहचानने में सक्षम है। बच्चा वर्णित जानवर का चित्र/स्केच बनाने में सक्षम है।
विविध प्रकार के जानवरों को वर्गीकृत करना (स्तनधारी, उभयचर, सरीसृप,कीड़े और पक्षी)।	बच्चा जानवरों को उनके प्रकार के अनुसार वर्गीकृत करने में सक्षम है।
प्रत्येक जानवर के आवास-स्थल के बारे में बुनियादी जानकारी का विकास करना	बच्चा जानवरों और उनके आवास के फ्लैशकार्डों को देखकर जानवरों का मिलान उनके आवास के साथ कर सकता है।
जानवरों के भोजन की समझ विकसित करना	बच्चा खाद्य शृंखला को बनाने में सक्षम है।
साक्षात्कार के लिए प्रश्न तैयार करना	बच्चा (अ) पूछताछ के लिए प्रासंगिक प्रश्नों को पहचानने में सक्षम है। (ब) साक्षात्कार देने वाले से आत्मविश्वास के साथ प्रश्न पूछता है।
पत्रिका निर्माण करना	बच्चा (अ) प्राप्त जानकारी को सिलसिलेवार व्यवस्थित करने में सक्षम है। (ब) पत्रिका निर्माण में रचनात्मकता/ईमानदारी दिखाता है।
समूह में काम करना	बच्चा (अ) समूह के अन्य सदस्यों के साथ आराम से काम करता है (ब) दूसरों की बात मानता है। (स) समूह कार्य करने में पहल दिखाता है। (द) जरूरतमन्द साथियों की मदद करता है। (ई) अपने साथियों के प्रति संवेदनशीलता दिखाता है।

विवरणात्मक संकेतक बनाने के बाद शिक्षक को उन्हें शैक्षिक व गैर-शैक्षिक वर्गों में बाँटना चाहिए, इससे उन्हें बच्चे का समग्र आकलन करने में मदद मिलेगी।

उपर्युक्त उदाहरण यह बताता है कि शिक्षक ने आकलन को शिक्षण-अधिगम की प्रक्रिया में कैसे समेकित किया।

रचनात्मक आकलन कई तरह से किया जा सकता है जैसे कि-रोल प्ले, क्विज, वाद-विवाद, प्रायोजना कार्य आदि। शिक्षक को विषय-सामग्री और उद्देश्यों के आधार पर गतिविधि चुननी चाहिए और आकलन करने के लिए या तो संकेतक या जाँच सूची या रूब्रिक्स बनाने चाहिए।

अन्त में

सी.सी.ई. की सफलता शिक्षक पर निर्भर है क्योंकि कक्षा में इसे लागू करने में वे मुख्य भूमिका निभाते हैं। प्रशिक्षण की हर कार्यशाला में शिक्षकों के परिप्रेक्ष्य के निर्माण के साथ-साथ इन बातों पर व्यावहारिक सत्र होने चाहिए-(अ) गतिविधियों की योजना कैसे बनाई जाए और बच्चे का आकलन कैसे किया जाए, (ब) संकेतक निर्माण, रिकॉर्ड लिखना और उन्हें बनाए रखना, (स) जाँच सूची, रूब्रिक, ग्रेडों को अंक में बदलना, प्रतिशतक की गणना करना आदि के लिए मापदण्ड बनाना।

चूँकि एक कार्यशाला पर्याप्त नहीं है इसलिए शिक्षकों के साथ कार्यशालाओं की शृंखलाएँ आयोजित की जानी चाहिए एवं प्रशिक्षकों को पहले दिन से ही सी.सी.ई. की विधियों के व्यावहारिक पहलुओं (केवल उसके पीछे के सिद्धान्त नहीं) के बारे में शिक्षकों को बताना चाहिए ताकि वे उसे बेहतर रूप से समझकर उसकी सराहना कर सकें।

शुरू की एक या दो कार्यशालाओं में व्यावहारिक पहलुओं पर अधिक जोर देना देना चाहिए-परिप्रेक्ष्य के निर्माण के सिद्धान्त के साथ-और प्रशिक्षकों को शिक्षकों को जरा-सा सहारा देना चाहिए ताकि उन्हें सी.सी.ई. की विधियों की व्यावहारिकता की जानकारी मिल सके।

जब शिक्षक सी.सी.ई.के दिशा निर्देशों के साथ थोड़े परिचित हो जाएँ तो अगली कार्यशालाओं में सिखाई गई गतिविधियों को करने में उनकी तत्परता पर ध्यान केन्द्रित करना चाहिए। इन सत्रों में प्रशिक्षकों को एक सुगमकर्ता/गाइड की भूमिका निभानी चाहिए।

आजकल शिक्षकों का तनाव काफी बढ़ गया है क्योंकि उनसे यह अपेक्षा की जाती है कि वे नए सी.सी.ई. के नियमों का पालन करें ताकि अपने-अपने स्कूलों में इसका कार्यान्वयन सही तरीके से कर सकें।

इस बात को मान लेने में समझदारी है कि जब शिक्षक सी.सी.ई. प्रशिक्षण के लिए आते हैं तो अगर उन्हें अपने दिन-प्रतिदिन के काम में आसानी से प्रयोग में लाई जाने वाली प्रासंगिक तकनीकों से-उदाहरणों के साथ-अवगत कराया जाए तो वे इस बात की सराहना करेंगे।

__महुआ__ ने दिसम्बर 2009 में अज़ीम प्रेमजी फाउण्डेशन की एकेडेमिक्स एण्ड पेडॉगॉजी टीम में भूगोल विषय की विशेषज्ञ के रूप में काम प्रारम्भ किया। सम्प्रति वे अज़ीम प्रेमजी इंस्टीटयूट फॉर असेसमेंट एण्ड एक्रिडिटेशन की लर्नर असेसमेण्ट टीम में कार्यरत हैं। फाउण्डेशन में आने के पहले वे बंगलौर एवं कोलकाता के ICSE, WBHS, SSLC, IGCSE स्कूलों में माध्यमिक एवं उच्च माध्यमिक स्तर की कक्षाओं की शिक्षिका के रूप में काम कर चुकी हैं। उनसे mahuya@azimpremjifoundation.org पर सम्पर्क किया जा सकता है। __अनुवाद__ : नलिनी रावल